संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२२ ●संयुक्तांक : ३७-३८● १० व १७ अक्टूबर २०१७ कार्तिक कृष्ण पक्ष त्रयोदशी संवत् २०७४ ● दयानन्दाब्द १६३ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११८

– आर्यों दीपावली पर संकल्प लें

महर्षि दयानन्द हमारे आदर्श हैं

– डॉ० धीरज सिंह आर्य, सभा प्रधान

महर्षि दयानन्द हमारे आदर्श पुरुष हैं जो सदैव सत्य की रक्षा के लिए संघर्ष करते रहे। सत्याचरण से ही उनका जीवन आदर्श बना, वे बड़ी से बड़ी विपत्ति में भी कभी नहीं घबराये। बचपन से लेकर जीवन के अन्तिम समय तक संघर्षों और कष्टों से भरा जीवन रहा। बचपन में सच्चेशिव की खोज करने के लिए व्रत किया रात्रि जागरण किया फिर घर माता–पिता, भाई बहिन पूरा परिवार छोड़कर भूख प्यास की परवाह किये बिना अपने लक्ष्य पर लगे रहे। जैसा शिवरात्रि पर पूज्य पिता श्री ने कहा था कि असली शिव तो कैलाश पर्वत पर रहता है यहां तो यह मूर्ति निमित्त मात्र है बस यही बात उनके मन में बैठ गई और टंकारा गुजरात से पैदल चलते–चलते जब तक कैलाश पर्वत पर नहीं पहुंच जाते तब तक यात्रा चलती ही रहती है और वहां जाकर ओखी मठ के महन्त से भेंट होती है। युवा मूलशंकर की आभा से वार्तालाप से महत्त प्रभावित होकर कहता है कि मेरा प्रमुख शिष्य बन जा पूरे जीवन मौज लेते रहोगे। उन्होंने उत्तर देते हुए कहा कि मेरे घर में किसी वस्तु का अभाव नहीं था मौज तो मैं वहां भी ले रहा था लेकिन मैं तो सच्चे शिव (ईश्वर) के दर्शन करने आया हूं आप इसमें मेरी सहायता कर सकते हैं तो मेरा सौभाग्य होगा। लेकिन वहां तिलों में तैल नहीं था महन्त निरूत्तर हो गया।

तेजस्वी युवा पिता के इस सन्देश से भी निराश हुआ कि यहाँ भी शिव (ईश्वर) के दर्शन नहीं हुए फिर भी (ईश्वर) विश्वासी ने हार नहीं मानी और जहां भी कोई योगी मिला वहां दर्शनार्थ गए तथा अपनी समस्या उसके सम्मुख रख दी योग सीखा समाधि का अभ्यास किया और अपनी जिज्ञासा की पिपासा को दूर करने के लिए यात्रा आगे बढ़ती रही पहाड़ों से हरिद्वार से गढ़मुक्तेश्वर फिर वहां से मथुरा जाकर गुरूविरजानन्द जी के चरणों में पहुंच कर वेद ज्ञान का अमृत प्राप्त किया तथा उस समस्या का पूर्ण समाधान प्राप्त कर लिया आज जीवन का एक लक्ष्य पाकर वह योगी युवा सन्यासी अतीव प्रसन्न है गुरू दक्षिणा देकर आज विदा होना चाहते हैं जैसे दीक्षान्त समारोह मनाया जाता है वैसा दीक्षान्त आज अनोखे रूप में था कुछ लौंग लेकर गुरूजी को दक्षिणा में देना चाहते हैं कृतज्ञता का भाव मुखमण्डल पर लेकर मधुर श्रद्धामयी वाणी में बोले गुरूदेव !! मेरे पास कुछ नहीं है मैं आपको क्या दे सकता हूँ आपने इतना ज्ञान दिया है कुछ लौंग लेकर आया हूं स्वीकार करें। इतना सुनते ही बूढ़े प्रज्ञाचक्षु दण्डी सन्यासी गुरूजी की आंखों में आंसू भर आये और विदाई समय पर अवरूद्ध कण्ठ से बोले वत्स!! मुझे तेरी लौंग नहीं चाहिये। मुझे तो बस तेरा जीवन ही चाहिए। इतना सुनकर एक क्षण रूके और बोले गुरूदेव! जैसी आपकी आज्ञा में तैयार हूं। गुरूजी ने अज्ञान अन्धकार में भटके हुए लोगों के लिए वेद ज्ञान का मार्ग बताने के लिए आदेश दिया कि जाओ समाज में फैली कुरीतियां समाप्त करो सच्चाई तथा ईश्वर का लोगों को बोध कराओ गुरूडम का किलाध्वस्त कर दो बस मेरी यही गुरूदक्षिणा है।

तब से लेकर जीवन के अन्तिम समय तक का इतिहास गौरव पूर्ण है आज दीपावली का पावन पर्व है शरीर पर विष पीने से छाले पड़ गए है भयंकर पीड़ा है दस्तों से शरीर कमजोर हो चुका है निमोनिया का भी प्रभाव है डॉ० लक्ष्मण दास जी हवा में रहने के लिए मना करते हैं विष की भयंकर गर्मी अन्दर रहने को मना करती है ऐसी स्थिति में भी शान्त चित्त गम्भीर हैं जैसे कुछ कष्ट ही न हो सहनशीलता की पराकाष्ठा है महर्षि के शिष्य चारों ओर से आ गए हैं अन्तिम दर्शन लाभ लेना चाहते हैं लाहौर से पं० गुरूदत्त विद्यार्थी भी आये हैं वे नास्तिक हैं ईश्वर पर विश्वास नहीं करते लेकिन उनकी अवस्था देखकर उन्हें महान् आश्चर्य होता है कि ऐसी कोई न कोई शक्ति है जो इतने कष्ट में भी प्रसन्नता है।

बस अन्तर्मन से उनके दर्शन मात्र से ही ईश्वर पर पक्का विश्वास हो गया जो उनके विचारों को जीवन पर्यन्त प्रचार करके ऋण उतारने का प्रयास करते हैं।

ऐसे गुरूवर महर्षि दयानन्द हमारे आदर्श पुरूष हैं उनके प्रत्येक व्यवहार से हमें प्रेरणा मिलती है। आज दीपावली का पावन पर्व है कि जिस गुरू के हम शिष्य हैं हमारे जीवन में भी वही शक्ति सत्य निष्ठा और समर्पण भाव स्थापित हो जो हम भी सोई आर्य जाति को जगाकर वेद ज्ञान से अज्ञान अन्धकार को दूर करते हुए सच्चे अर्थों में दीपावली पर्व जो प्रकाश पर्व कहलाता है मनाने का व्रत लें और यह दीपावली प्रसन्नता उत्साह पवित्रता से युक्त होकर हमारे जीवन में खुशियां बढ़ाये पुनः मैं आर्य प्रतिनिध सभा उ०प्र० की ओर से सभी ऋषिभक्तों, आर्यों को दीपावली पर्व की शुभ कामनायें प्रदान करता हूँ।

दीपावली की सभी को हार्दिक शुभकामनाएं

दीपावली पर्व नवसस्येष्टि यज्ञ का पर्व है खुशी–सुगन्धि का पर्व है यज्ञ द्वारा घर–घर सुगन्ध फैलायें पटाखे जलाकर दुर्गन्ध न करें प्रतिज्ञा करें कि हम पर्व की पवित्रता हेतु यज्ञ करेगें दीप जलायेगें दुर्गन्ध युक्त कोई पदार्थ नहीं जलायेंगे आर्थिक हानि–वायु प्रदूषण तथा कई बार दुर्घटनायें भी हो जाती हैं। उनसे बचे ज्योति पर्व–प्रसन्नता का पर्व हर घर में सुख–समृद्धि बढ़ाने वाला हो।

डॉ. धीरज सिंह आर्य
सभा प्रधान

अरविन्द आर्य
कोषाध्यक्ष

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मंत्री

अन्तरंगाधिवेशन की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, (नारायण स्वामी भवन), ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ की आगामी अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन **दिनांक 12 नवम्बर, 2017 रविवार तद्नु माघ कृष्ण नवमी को प्रातः 11.00 बजे से संस्था प्रधान/का० प्रधान–डॉ० धीरज सिंह की अध्यक्षता में आर्य समाज जसवन्तनगर, इटावा में सम्पन्न होगी,** जिसमें निम्नलिखित विषयों पर विचार एवं निर्णय लिये जायेंगे। आपकी उपस्थिति अतिआवश्यक एवं प्रार्थनीय है। विषयवार एजेण्डा आपके पते पर रजिस्टर्ड डाक द्वारा प्रेषित किया जा चुका है।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मंत्री
मो० : ०९८३७४०२१९२

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

आओ मिलकर हम दीप जलावें। अज्ञान अन्धकार को दूर भगावें।।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने दीपावली के पावन पर्व पर एक सन्देश दिया था? १. आओ सब मेरे पीछे आ जाओ। २. दूसरा सन्देश था कि सब दरवाजे खोल दो। उसके पश्चात् ईश्वर स्तुति करते हुए अन्त में कहा कि हे ईश्वर तूने अच्छी लीला की– तेरी इच्छा पूर्ण हो।।

इतना कहकर मोक्षधाम को प्राप्त कर लिया। वह नश्वर स्थूल शरीर छोड़कर जीवात्मा सूक्ष्म शरीर के साथ ब्रह्मलोक में विलीन हो गया। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पूरे जीवन जो कुछ पढ़ा, सीखा, अनुभव किया उसे अन्तिम समय सार रूप में सन्देश दे गए। ब्रह्मा से लेकर जैमिनी ऋषि पर्यन्त हमारे पूर्वज जो मानते आये हैं मैं उसे यथावत् मानता और मनाने को कहता हूँ ऋषि परम्परा को जनमानस तक पहुंचाने का सपना देखा और उसे पूरा करने के लिए अपना सब कुछ वार दिया अर्थात् बलिदान कर दिया। मेरे पीछे आने का भाव है कि मेरे अनुयायी बन जाओ अन्यथा कुछ भी हाथ न लगेगा पूरे जीवन वेदों के मार्ग से हटकर चलते रहे तो भी सुख एवं शान्ति नहीं मिल पायेगी। छूआ–छूत गुरूडम, पाखण्ड, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, श्राद्ध, तर्पण, बालविवाह, जैसी कुरीतियां समाज को कमजोर कर रही थीं उनके विरूद्ध सिद्धान्त की कसौटी पर तर्क का हथोड़ा लेकर स्वामी जी ने प्रहार किया और समान शिक्षा, समान पूजा पद्धति, देशभक्ति, माता, पिता, गुरुजनों की शिक्षा से संस्कार बनाने के लिए जो कुछ धर्म के ठेकेदारों ने दरवाजे, खिड़कियां बन्द की हुई थी, उन्होंने खोलने का सन्देश दिया।

अतः स्वामी जी का यह सन्देश था कि अब समाज को तोड़ने की नहीं जोड़ने की आवश्यकता है और वह तभी सम्भव है जब भेद–भाव छूआ–छूत जैसी मानसिकता से ऊपर उठकर शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्ति की जाये। समान शिक्षा, समान खान–पान, समान व्यवहार होगा तो समाज को सुदृढ़ता मिलेगी उस दिशा में आर्यसमाज ने प्रारम्भिक युग में उत्साह पूर्वक आन्दोलन की तरह कार्य किया जो आज मन्द पड़ चुका है आर्य समाज के प्रत्येक कार्यकर्त्ता को चिन्तन करने का समय है।

दीपावली का पावन पर्व इसीलिए प्रतिवर्ष आता है कि हम सब अपनी कमजोरियां दूर करके ऊर्जा प्राप्त करते हैं। दीपक से दीप जलाने की परम्परा बहुत पुरानी है जो संगठन का प्रतीक है ''अप्प दीपो भव'' आप स्वयं दीपक बने और अन्य दीपों को भी प्रकाशित करें **''अग्निना अग्निः समिध्यते''** अग्नि प्रज्वलित होगी तभी अच्छा प्रकाश हो सकेगा आचार्य स्वयं अग्नि है दीपक है वह अपने शिष्यों को ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित करता है इसी प्रकार उपदेशक दीपक है अग्नि है वह अपने उपदेश रूपी प्रकाश से सभी श्रोताओं के हृदय में ज्ञान का प्रकाश कर अपने कर्तव्य को पूरा करता है। **''अग्निमीडे पुरोहितं..''** इसी प्रकार महर्षि दयानन्द सरस्वती रूपी दीपक ने अपने जीवन रूपी दीप द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द जी, पं० लेखराम जी, स्वामी दर्शनाननद जी पं० गुरूदत्त विद्यार्थी जैसे दीप प्रज्वलित किये। घर में जैसे माता एक दीपक से सैकड़ों दीप प्रज्वलित कर दीपावली मनाती है उसी प्रकार समाज के अज्ञान अन्धकार को दूर करने के लिए जो हमारे आदर्श पुरूष विद्वान् सन्यासी उपदेशक हुए हैं उन्होंने हम जैसे दीपक प्रज्वलित किये हैं अब हमारा भी कर्तव्य है कि हम भी कुछ दीपक प्रज्वलित करें। प्रतिवर्ष दीपावली यही सन्देश देती है यह दीपावली प्रत्येक क्षेत्र में रहने वाले गरीब की झोपड़ी तक जो प्रसन्नता उत्साह होता है वही हमारा उत्साह समाज के प्रत्येक वर्ग तक जाकर महर्षि दयानन्द के उस सन्देश को सुनायें कि अब सब मिलकर स्वच्छता अभियान की तरह अज्ञान का कूड़ा–करकट दूर करना है जो वेदज्ञान द्वारा ही सम्भव है वेद की ज्योति जलती रहे का नारा तभी सार्थक होगा उसके लिए सार्थक कदम उठाने का संकल्प लेना है। महर्षि के अनुयायी सच्चे सिपाही बनकर आगे आये और घर–घर में वेद ज्ञान का दीप जलायें। अज्ञान अन्धकार को दूर भगायें।। सरस्वती से लक्ष्मी को पाने की इच्छा भी प्रभु तभी पूर्ण करेंगें। आप सभी को मेरी बहुत–बहुत दीपावली की शुभकामनायें, उजाला लेकर आयें। यही दुआये जीवन को महकाये, खुशी मनायें। - **सम्पादक**

दिल जलते दीवाली में

सुविख्यात कवि – **डॉ० सारस्वत मोहन ''मनीषी''**

अनगिन छेद कर दिये जयचन्दों ने थाली में।
दीप नहीं दिल जलते हैं अब तो दीवाली में।
आज झूठ का मुख गोरा सच्चाई काली है।
हर छाती पर तनी हुई अदृश्य दुनाली है।
धर्मस्थल का हर पापी पण्डा पाखण्डी है।
उठो मांगती खून आज फिर से रणचण्डी है।
दोष ढूढ़ता जनता सीता सी घरवाली में।
दीप नहीं दिल जलते हैं अब तो दीवाली में। १।
देश बटा फिर से तैयारी क्या बटवाओगे।
लोग नित्य मर रहे और कितने मरवाओगे।
बोलो सत्य कर्णधारों लाशे है कफन नहीं।
अधिक बत्तमीजी हमसे अब होगी सहन नहीं।
कंस, चंगेजो की रूह बस गई माली में।
दीप नहीं दिल जलते हैं, अब तो दीवाली में।२।
सच्चा भारतवासी हिन्दू हिन्दूस्थानी है।
देशद्रोह करने वाली क्या खाक जवानी है।
रक्त सना आंचल कोई भी साफ नहीं होगा।
यहां देशद्रोही कोई भी माफ नहीं होगा।
जहर मिलाया जाता है अमृत की प्याली से।
दीप नहीं दिल जलते हैं अब तो दीवाली में।।३।।
जनता जिस दिन जागेगी तो मौसम जागेगा।
गद्दारी का भूत पांव सिंर पर रख भागेगा।
जनता आती मीर जाफरो दूर दौड़ जाजो।
ओ शिखण्डियों सिंहासन को तुरन्त छोड़ जाओ।
इत्र छिड़कने से क्या होगा गन्दी नाली में।
दीप नहीं दिल जलते हैं अब तो दीवाली में।।४।।
बालू– बाल बिंध गया कर्ज में प्यारी खादी का।
धीरे– धीरे चूर हुआ सपना आजादी का।
कटते–कटते देश हुआ मुल्ला का पाजामा।
घर–घर लाक्षागृह बनवाते हैं शकुनी मामा।
दुर्योधन सिंहासन ढूढ़े दुष्ट दुनाली में।।५।।
दीप नहीं दिल जलते हैं अब तो दीवाली में।
टिकटी पर छाती है गर्दन है तलवारे हैं।
राजा को अपनों से अधिक विदेशी प्यारे हैं।
मुट्ठी हैं सीढ़ी है जहर उगलते नारे हैं।
आंख दिखाने लगे सूर्य को चन्दा तारे हैं।
हुआ व्यक्ति से अधिक भरोसा ताले–ताली में।।६।।
दीप नहीं दिल जलते हैं अब तो दीवाली में।
हत्या और आत्म हत्या होठों पर ताले हैं।
सरिये ठुके दिमागों में नस–नस पर छाले हैं।
प्रतिभा पैसा घुटन पलायन है आरक्षक हैं।
भारत मां के रोम–रोम पर अनगिन तक्षक हैं।
सोना चांदी लूट रहे कुछ लोग दलाली में
दीप नहीं दिल जलते हैं अब तो दीवाली में।।७।।

संकलन– शिवम् शास्त्री

धरोहर

आर्य समाज के गौरव
आचार्य राजवीर शास्त्री

प्रस्तावना – आचार्य राजवीर शास्त्री एक ऐसा गौरवशाली नाम है जो आर्य जगत में प्रत्येक आबाल वृद्ध के लिए सुपरिचित हैं। देखने में सामान्य सा लगने वाला इतना विशेष व्यक्तित्व हो सकता है इसकी कल्पना सामान्य लोग नहीं कर पाते थे। अपने जीवन को संघर्षों से परिपूर्ण वह कहानी जो अभी तक प्रकाशित नहीं है अपने अनुभवों को साझा करना और जीवन के गूढ़ रहस्यों को मुझे बताना ऐसा लगता है कि उनका मेरे प्रति विशेष स्नेह एवं आत्मीय विश्वास भी था कि यह सम्भवतया इन बातों को कहीं प्रचारित नहीं करूंगा। अपने अन्तःकरण से निकलने वाली बातों से परिचित कराने का अवसर उन्हें व्यस्तता में मिल नहीं पाता था। वे तो विद्या व्यसनी थे सदैव पुस्तकों में ही अध्ययनरत रहना अपना सौभाग्य अनुभव करते थे उनके व्यवहार में कथनी और करनी एक थी लिखा भी है –

मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम।
मनस्यन्यद वचस्यन्यद् कर्मण्यन्पद दुरात्मानाम।।

इसी आधार पर कहा जा सकता है कि वे महात्मा थे विद्वान् थे तपस्वी थे सन्तोषी शीलस्वभाव के धनी थे। सदैव प्रसन्नचित रहकर सहज भाव से प्रत्येक समस्या का समाधान कर दिया करते थे उनके स्वभाव में सरलता–सादगी सौम्यता सकारात्मकता जीवन्त रूपेण विद्यमान थी वे किसी प्रकार के बाघाडम्बर को स्वीकार नहीं करते थे। उनकों सरस्वती का वरद हस्त प्राप्त था ''**विद्या कण्ठ**'' वाली उक्ति चरितार्थ कर चुके थे–

पुस्तकेषु यथाविद्या पर हस्ते गतं धनम्।
प्राप्ते काले समुत्पन्ने न सा विधा न तद्धनम्।

इस बातको अनुभव करके आपने सदैव विद्या को अपनी सहेली बनाया, सरस्वती को मां बनाया और ज्ञान को पिता बनाकर सुन्दर परिवार में प्रसन्नचित्त रहकर उनकी उपासना में ही जीवन लगा दिया।

आर्य समाज को गौरव प्राप्त है ऐसे मनीषी विद्वान् को पाकर जो महर्षि दयानन्द सरस्वती को स्वयं समझाकर हमें समझाने के लिए पूरे दस वर्षों तक घोर तप किया था, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने तो दस वर्षों तक गंगा किनारे हरिद्वार से कलकत्ता तक घोर तप किया था ''आत्मज्ञान'' के लिए भूख–प्यास, गर्मी, सर्दी मान, अपमान, को सहन किया ''द्वन्द्व सहनं तपः'' को सार्थक किया। वर्ष में ६ ऋतुओं में ३ प्रतिवर्ष अपनी पराकाष्ठा से प्राणी मात्र को प्रभावित करती हैं जिसमें बिना साधन व्यक्ति १ दिन भी अपनी सहन शक्ति से उसे अनुकूल नहीं बना सकता लेकिन गुरूवर दयानन्द जी ने तो १ दिन १ मास १ वर्ष नहीं अपितु २० वर्षों तक घोर तप करके अपने को तथा अपने प्रभु उपास्यदेव को समाधि द्वारा साक्षात् रूपेण अनुभव किया था वे अनुभव सिद्ध महापुरूष थे।

इसी प्रकार आचार्य जी ने महर्षि दयानन्द के समस्त ज्ञान भण्डार को समझकर समझाने के लिए ''दयानन्द कोष'' नामक ग्रन्थ लिखने में पूरे १० वर्षों तक घोर तप किया था जिसमें शरीर के प्रति वे उदासीन रहकर भूख–प्यास को सहकर दिन रात अनुसन्धान एवं लेखन करते हुए नींद की परवाह नहीं की ''समुद्र मन्थन'' में जैसे अमृत देवताओं ने प्राप्त किया था। उसी प्रकार ''दयानन्द कोष'' रूपी अमृत प्राप्त हुआ। पढ़ने वाले विद्वान् कहते हैं कि कितना परिश्रम किया होगा जैसे विष्णु शब्द है महर्षि के किस ग्रन्थ में आया है उसका अर्थ वहां पर क्या है? प्रत्येक ग्रन्थ को कितनी बार पढ़ा होगा उसे लिखना उसका निर्वचन करना बहुत परिश्रम साध्य कार्य है। आपने मुझे बताया कि मुझे १० वर्षों तक मानों कुछ दिखाई नहीं दिया परिवार के सुख–दुःख के भी किसी कार्यक्रम में नहीं गया क्योंकि इसमें भी समग्र भाव से आप अनुमान लगा सकते हैं किसी रिश्तेदारी में कोई छोटा–बड़ा कार्यक्रम हो उसमें आत्मीय व्यक्ति न जाये तो आपको कैसा लगेगा? वैसा ही सभी को लगता था लेकिन शास्त्री जी क्षमा याचना कर लेते थे और अपने कार्य में सदैव योगी की तरह लेखन में ही लगे रहते थे। इस ग्रन्थ के अतिरिक्त अन्य भी कई ग्रन्थ आपने तैयार किये हैं उसका प्रकरण आगे आयेगा ऐसे मनीषी के विषय में कुछ लिखना ''सूर्य को दीपक दिखाने'' जैसा लग रहा है, लेकिन लिखना है क्योंकि भावी पीढ़ी प्रेरणा प्राप्त कर जीवन में आगे बढ़ेगी कविकुल गुरू महाकवि कालिदास रघु वंश में लिखते हैं–

रघुकुल की परम्परा को लिखने का सामर्थ्य मुझमें नहीं है मैं उपहास को प्राप्त हो रहा हूं जैसे बौना व्यक्ति ऊपर हाथ करके फल प्राप्त करने की इच्छा से प्रयास करता हुआ उपहास का पात्र बनता है पर क्या करूं।

रघुकुल परम्परा में मेरी श्रद्धा और विश्वास है। अतः ''**तद्गुणैः कर्णमागत्य चापलाय प्रचोदितः**'' उसी प्रकार मुझे भी कुछ–कुछ अनुभव हो रहा है मैं क्या क्या उनके विषय में लिख सकता हूं मेरा सामर्थ्य क्या है? फिर भी बार–बार प्रिय डॉ० दिनेश शास्त्री जी द्वारा प्रेरित करते मुझे लगा कि इस परिवार की भी इतनी अच्छी विशेषतायें हैं इतना सर्मपण और आपस में आत्मीय भाव है इन सद्गुणों को यदि न लिखूँ तो भावी पीढ़ी के साथ सीधा अन्याय होगा और मुझे वह अन्दर से कमजोर भी करेगा। इस परिवार का मैं ऋणी हूं मैं उस ऋण से मुक्त तभी हो सकूंगा जब उन गुणों की चर्चा आबाल वृद्ध तक पहुंचा सकूं इस भाव को लेकर आपसे इस भाव की अपेक्षा करूंगा कि आप भी पढ़ते हुए भावों पर ही विशेष ध्यान देना भाषा में व्यतिक्रम हो जाये तो उसे अन्यथा नहीं लेगें ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है।

गुरूकुल–हापुड़

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ
संचालक–गुरूकुल पूठ, हापुड़
मो० ६८३७४०२१६२

गतांक का शेष....

आचार्या सुमेधा जी एवं आचार्या सुकामा जी

मैं उस घटना को कभी नहीं भूल पाता जब एक दिन मुझे भवाना के निकट निडावली के कार्यक्रम से आना हुआ वहां सुमित्रा आर्या के पिता जी ने कहा कि छात्राओं को गुरूकुल छोड़ देगें तो इनका समय बच जायेगा मुझे पूठ आना ही था कई बार मुरादाबाद आदि से भी सेवा का अवसर मिला है जब मैं रजबपुर से गुरूकुल की ओर चला अचानक आन्धी तूफान वर्षा ओले पड़ने लगे।

गाड़ी धीरे–धीरे जा रही थी रास्ते में पानी भर गया था स्पष्ट मार्ग भी दिखाई नहीं देता था तभी मार्ग में देखा कि बहिन सुकामा जी सिर पर पगड़ी बान्धे हाथ में मोटा लट्ठ लिये जा रही हैं उनके कपड़े पानी में भीग रहे थे पैदल जाते देख गाड़ी रोक ली खूब विनय करने पर भी गाड़ी में नहीं बैठी बोली कि मुझे यहां कोई भय नहीं है कपड़े भीग रहे हैं सीट खराब हो जायेगी घोर बिजली का गर्जन, वर्षा होते हुए भी रात्रि में अकेले ही गुरूपुर तक आई पता चला किसी अतिथि को छोड़ने रजबहादुर तक गईं थी तभी अचानक वर्षा आ गई।

इस प्रकार की वीरांगना जब समाज में होगी तभी तो छात्राओं में भी अत्मिक बल–शरीरिक बल बढ़ेगा ओर वे जीवन के प्रत्येक दुःख दर्द में सहन–शक्ति द्वारा अपना सम्मान सुरक्षित रख सकेगी। यह संस्कारों द्वारा प्रशिक्षण सम्भव है। कन्या गुरूकुल चोटीपुरा ने धनुर्विद्या में भी कीर्तिमान बनाये हैं परीक्षा में स्वर्ण पदक प्राप्त किये हैं। गौशाला का विस्तार भी प्रशंसा के योग्य है प्रत्येक व्यवस्था अपने आप में एक आदर्श उदाहरण है इसके पीछे दोनों बहिनों का तप, त्याग, समर्पण है अब तो अनिता आर्या सुरभि आर्या जैसी कई स्नातिकायें हैं जो अग्निना अग्नि समिध्यते दीपक से दीपक प्रज्वलित होकर दीपावली बन चुकी है जो सर्वत्र अज्ञान रूपी अन्धकर को दूर कर प्रकाशित समाज में नारी के सम्मान की सुरक्षा को दूर कर प्रकाशित समाज में नारी के सम्मान की सुरक्षा करें तभी यत्र नार्यास्तु... सार्थक कहेगा मेरी ओर से एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की ओर से दोनों बहिनों आचार्यों का बहुत–बहुत अभिनन्दन है। शिक्षा दिवस हमारे जीवन में प्रकाश प्रज्ज्वलित करे। ऐसी प्रभु से प्रार्थना है। प्रभो इन्हे दीर्घायु और आरोग्य प्रदान करो।

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती– सभा मंत्री

दीपावली पर विशेष–

महर्षि दयानन्द सरस्वती

– साभार
कल्याण मासिक पत्रिका 1948

दयानंद जी उच्चतम आदर्श हैं। वेदों के प्रति उनका त्याग, उद्योग एवं सेवा महान् हैं। हम दीपावली के पावन पर्व पर सादर नमन करते हैं।

गुरूकुल–पूठ, मो० : ६४११०२६७७५

संकलन- दिनेश शास्त्री

काठियावाड़ के मोरवी राज्य में टंकारा छोटा सा गांव है, जहां वेदपाठी, धर्मनिष्ठ ब्राह्मण कर्षन तिवारी के यहां उस बालक ने जन्म लिया, जो आगे दशे में स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम से विख्यात हुआ। बालक का घर का नाम मूलशंकर था। बालक मूलशंकर बचपन से वीतराग एवं सत्यान्वेषी थे। विवाह–संस्कार संपन्न होने का निश्चय किया पिता ने और उन्होंने उस तिथि से १ सप्ताह पूर्व ही घर छोड़ दिया। श्रीनर्मदा–तट पर स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से मूलशंकर ने सन्यास ग्रहण किया। वे स्वामी दयानन्द सरस्वती हो गए। गुरू के आश्रम में पर्यटन करते हुए काशी होकर मथुरा पहुंचे। यहीं उन्हें प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानंद जी के दर्शन हुए। वस्तुतः स्वामी दयानन्द जी के यही वास्तविक शिक्षागुरू हुए। इन्हीं से स्वामी जी ने व्याकरण, वेदप्रभृति की शिक्षा प्राप्त की। इन्हीं गुरूदेव के आदेश से वे आर्य समाज की स्थापना में प्रवृत्त हुए। सन्१८६३ के हरिद्वार महाकुंभ के अवसर पर उन्होंने पहले–पहले वेद का प्रचार प्रारंभ किया।

स्वामी दयानन्द जी ने अपनी शैली से वेदों का भाष्य प्रारंभ किया। उनके द्वारा सर्वप्रथम मुबई और लाहौर में आर्य समाज की स्थापना हुई। पहले वे एनीबेसेंट के साथ कुछ दिनों कार्य करते रहे, किन्तु वेदों में स्वामी जी की अखण्ड निष्ठा थी। थियासोफी–संप्रदाय से उनका मत मिल नहीं सका, वे पृथक् प्रचार में लग गए। उनमे प्रकांड प्रतिभा थी, उज्ज्वल त्याग था और उनकी वाणी में अद्भुत शक्ति थी। जनता पर उनका प्रभाव बहुत अधिक पड़ा।

स्वामी दयानन्द सरस्वती महान पुरुष थे, उनके जैसे स्पष्टवादी निर्भीक वक्ता बहुत कम होते हैं। वेदों में, प्राचीनतम भारतीय संस्कृति ने उनकी अगाध निष्ठा थी। उन्होंने भरपूर प्रयत्न किया वैदिक–धर्म की रक्षा का। वैदिक संस्कृति पर होने वाले आक्रमणों का उन्होंने प्राणपण से विरोध किया। एक विद्वान नेता के शब्दों में **''आर्य समाज हिन्दू धर्म का चौकीदार है''** स्वामी जी ने सच्चाई से प्रयत्न किया हिन्दू धर्म की रक्षा का। इसमें संदेह का स्थान ही नहीं है।

वे वीतराग महापुरूष दो टूक वक्ता, असदाचरण से उन्हें तीव्र घृणा थी। महाराज जोधपुर के निमंत्रण पर वे जोधपुर गये। महाराज के आचरण को उन्होंने स्पष्ट प्रतिवाद किया, फलतः महाराज की रखेल वेश्या ने उन्हें विष दिला दिया। उन महापुरूष ने विष के प्रभाव से ३१ अक्टूबर सन् १८८३ को शरीर छोड़ा और मरते–मरते अपने घातक के लिए दया का आदेश दे गये। दीपावली की वह रात्रि, दीपालोकों में ही वह दिव्यालोक निर्वापित हो गया।

मतभेद यह तो हिन्दू धर्म की परम उदारता का महान स्वरूप है कि वहां सैद्धांन्तिक मतभेदों का सदा स्वागत किया जाता है। लेकिन यह सभी को सादर स्वीकार करना पड़ेगा कि सत्य को स्वीकार करने के लिए प्रतिक्षण ऐसी उज्ज्वल तत्परता और वेदों के प्रति अगाध श्रद्धा के स्वामी दयानंद जी उच्चतम आदर्श हैं। वेदों के प्रति उनका त्याग, उद्योग एवं सेवा महान् हैं। हम दीपावली के पावन पर्व पर सादर नमन करते हैं।

प्रेरक प्रसंग -

अन्याय सहना पाप है

सर जगदीशचन्द्र बोस आधुनिक भारत के प्रथम महान् वैज्ञानिक थे भारत माता का यश विश्व के कोने–कोने में पहुँचाने वाला यह यशस्वी पुत्र अत्यन्त स्वाभिमानी था बोस किसी भी परिस्थिति में अपने स्वाभिमान को जरा–सी ठेंस नहीं लगने देते थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय में भौतिकी का अध्ययन करने के बाद वह इंग्लैंड में कैंब्रिज विश्व विद्यालय को चले गये थे, सन् १८८४ में वहाँ से स्नातक की डिग्री लेने के बाद वह भारत लौट आये, यहाँ प्रेसीडेंन्सी कालिज में भौतिकी के प्राध्यापक के पद पर उनकी नियुक्ति ही गई, उस समय अग्रेंजों का शासन था तथा अंग्रेज भारतीयों को अपमान की दृष्टि से देखते थे। बड़ा भेद, भाव किया जाता था। किसी भी भारतीय प्रोफेसर को यूरोपीय प्रोफसर की तुलना में दो तिहाई वेतन दिया जाता था, जिस पर बोस क्योंकि अस्थाई थे, इसलिए उन्हें यूरोपीय प्रोफेसरों के वेतन की तुलना में केवल आधा वेतन ही मिलता था। इससे बोस खुब्ध हो गये। उन्होंने कहा कि समान कार्य के समान वेतन दिया जाना चाहिए। उनका कहना था– ''मैं वेतन लूँगा तो पूरा, नहीं तो वेतन लूँगा ही नहीं''।

और सचमुच तीन वर्ष तक उन्होंने वेतन नहीं लिया। आर्थिक तंगी के कारण कलकत्ते का मंहगा मकान छोड़कर उन्हें शहर से दूर एक सस्ता सा मकान लेना पड़ा।

– हरीश शास्त्री

देश के लिए बलिदानी युवा –

मदन लाल ढींगरा

– ओमेन्द्र कुमार आर्य

१८८७ ई० में अमृतसर में एक विख्यात डाक्टर के घर में मदनलाल ढींगरा का जन्म हुआ। परिवार बड़ा सम्पन्न था और उनके पिता अंग्रेजों के भक्त थे। उनकी शिक्षा–दीक्षा अमृतसर और लाहौर में सम्पन्न हुई। इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त करने के लिए वे लन्दन चले गए।

लन्दन में रहते हुए श्याम जी कृष्ण वर्मा और वीर सावरकर के सम्पर्क में आए। उनके विचारों से प्रभावित होकर उन्होंने क्रान्तिकारी कार्यों में रुचि लेना प्रारम्भ कर दिया। अंग्रेज गुप्तचरों की डायरी में ढींगरा का नाम भी आ गया। उनके घर ब्रिटिश सरकार ने पत्र लिखा कि वे ढींगरा को क्रान्तिकारी गतिविधियों से रोंके, पिताजी ने उनेक पत्र लिखकर उन्हें रोकने का यत्न किया किन्तु वे अपने पथ पर बढ़ते ही गए।

सह विलियम कर्जन वायली भारत संबंधी मंत्रालय के कार्यालय में काम करता था। उसी के संकेत पर भारत के क्रांतिकारियों का दमन किया जाता था। महाराष्ट्र, पंजाब और बंगाल में अनेक नवयुवक उसी के संकेत पर बन्दी बनाए गए तथा फांसी पर चढ़ाए गए, वह बड़ा चालाक और धूर्त था, ढींगरा के पिताजी से वह पत्र व्यवहार करता और इधर ढींगरा का हितैषी बनने का नाटक करता, ढींगरा उसकी सारी बातें सावरकर को बता देते।

आखिर क्रान्तिकारियों ने यह तय किया कि कर्जन वायली की हत्या की जाय। मदन लाल ढींगरा ने मन ही मन यह कार्य करने का निश्चय किया। इण्डिया हाउस क्रान्तिकारियों का अड्डा था ब्रिटिश सरकार ने उसे बन्द कर दिया। एक दिन ढींगरा ने सावरकर से पूछा– '' क्या बलिदान की घड़ी आ गई है?'' उत्तर मिला– यदि किसी ने संकल्प कर लिया तो बलिदान की घड़ी आ गई है'' ढींगरा मौन हो गए।

इन्हीं दिनों ज्ञात हुआ कि विज्ञान के विषय पर होने वाली एक बैठक में कर्जन वायली को आमंत्रित किया गया है, ढींगरा ने मन ही मन अपना संकल्प पूरा करने की योजना बना ली।

१ जुलाई १९०६ का दिन। ढींगरा ने अपनी पिस्तौल लेकर एक गुप्त स्थान पर निशानेबाजी का अभ्यास किया। सायं ६ बजे घर लौटे। हाथ मुंह धोकर शानदार सूट, गले में नकटाई और काला चश्मा पहन लिया। सिर पर आकाशी नीली पगड़ी बांधी। कोट की जबों में २ पिस्तौल तथा २ चाकू रखे। रात्रि आठ बजे इम्पीरियल इंस्टीट्यूट के जहांगीर हाल में पहुंच गए। रात दस बजे कर्जन वायली और उनकी पत्नी भी वहां पहुंच गए, अनेक सभ्रांत अंग्रेजों की बैठक हो रही थी। अपनी रिपोर्ट में मंत्री जब भारतीयों की निन्दा करने लगा तो ढींगरा अपने स्थान से तुरन्त उठे और वायली के पास पहुँचकर एक के बाद एक उस पर तीन गोलियां चलाई जिससे वहीं पर ढेर हो गया। ढींगरा को बन्दी बनाकर ब्रिस्टल के कारागार में रखा गया, ढींगरा पर मुकदमा चलाया गया, १० जुलाई को उन्होंने न्यायालय में कहा '' मैंने अंग्रेजों के पंजे से अपने देश को छुड़ाने के लिए ही कर्जन वायली पर गोली चलाई थी, मैंने कोई पाप और अपराध नहीं किया है। मैंने केवल अपने कर्तव्य का पालन किया है।'' मुकदमें के फैसले में उन्हें फांसी की सज़ा सुनाई गई। ११ अगस्त १९०९ के दिन वे फांसी के तख्ते पर शहीद हो गए। फांसी से पूर्व उन्होंने एक वक्तव्य दिया जिसने अनेक भारतीयों को प्रोत्साहित किया। इसमें उन्होंने कहा था–

''जिस प्रकार मैंने कर्जन वायली की हत्या की है उसी प्रकार प्रत्येक भारतीय नवयुवक को अत्याचारी अंग्रेजों की हत्या करनी चाहिए, मुझे अपने कार्य पर गर्व है। मैं हिन्दू हूँ, पुनर्जन्म में मेरी आस्था है, मैं चाहता हूँ कि बार–बार माता के गर्भ से मेरा जन्म हो और बार–बार मैं कर्जन वायली जैसे मनुष्य का वध करके फांसी पर चढूँ। वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्।

ढींगरा का यह बलिदान सदैव ही भारतवासियों को त्याग और अपने लक्ष्य के लिए सर्वस्स अर्पण करने के लिए प्रेरित करता रहेगा।

– ग्राम इकला, डासना (गा.बाद)
संचालक आर्यवीरदल गा० बाद

दीपावली पर विशेष आलेख–

महर्षि दयानन्द और प्रकाश

– ले0 डॉ0 ज्वलन्त कुमार शास्त्री
अमेठी

विश्व के सभी मनुष्यों को ही नहीं अपितु प्राणी मात्र को प्रकाश प्यारा है। उलूक और महाअन्धकार में रहने वाले कुछ क्षुद्र कृमि कीट इसके अपवाद हो सकते हैं। जो प्राणी जितना अभ्युत्रत है, जिसका अन्तःकरण मन–बुद्धि आदि तत्व जितना ज्यादा स्पन्दनशील है उतना ही उनमें न केवल भौतिक प्रकाश अपितु मानसिक बौद्धिक और आत्मिक ज्योति प्राप्त करने की ललक है।

''**ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंल्पमस्तु**'' वाक्–प्राण मनः बुद्धि और आत्म तत्व से संबलित मनुज समुदाय सभी जीवों में श्रेष्ठ हैं। निखिल मानव समुदाय की अन्तश्चेतना को सत्य–ज्ञान,–धर्म और न्याय के प्रकाश से आलोकित करने में संसार के जिन उल्लेखनीय मनीषियों का योगदान है उनमें ऋषि दयानन्द का स्थान वरेण्य है। महर्षि अरविन्द के शब्दों में दयानन्द विलक्षण हैं निराले हैं पर्वत श्रेणियों में एक अलग श्रेणी एक अलग उतुंग चोटी के समान।

अद्यतन प्रचलित धर्म–मत–मजहब–सम्प्रदाय और मतान्तर, आस्तिक, नास्तिक, कर्म, भाग्य, पुरूषार्थ, और दैव, जडाद्वैत, चेतनाद्वैत या द्वैत, अद्वैत के विभिन्न भेदोपभेद ज्ञान, कर्म, भक्ति के विविध मतवाद या अर्थ काम, और धर्म, शास्त्रियों की स्वशास्त्रीय दृष्टियों के स्थापित चौखटों में ऋषि दयानन्द का आकलन एकांगी होगा। दयानन्द ने अपने और पराये चाहे वह जाति, वर्ण, देश या मत–मतान्तरों में से किसी भी दृष्टि से हो, बिल्कुल परे रहकर पक्षपात रहित होकर न्याय की तुला पर सबको कसा है, परखा है और उनमें से ग्रहणीय, वरेण्य को स्वीकार किया है तथा त्याज्य, मानव मूल्य–विरोधी तत्वों की उपेक्षा ही नहीं की है, अपितु उसका सप्रमाण तर्क पुरसर खण्डन भी किया है। इस कार्य में उनका कोई लेशमात्र भी स्वार्थ या पक्षपात नहीं है। इसके लिए ऋषि ने व्यक्तिगत जीवन में स्वयं दारूण दुःख उठाये हैं और भयंकर विष वेदना को भी हंसते हसते सहन किया है तथा विश्व बन्धुत्व भाव से मानव ही नहीं प्राणिमात्र को अमृत प्रदान किया है।

ऋषि दयानन्द का यक्ष प्रश्नः ऋषि दयानन्द के दो जटिल यज्ञ प्रश्न हैं, जिनमें से पहला प्रश्न नास्तिकों से है– (१) अभाव से भाव की उत्पत्ति नहीं होती यह वैज्ञानिक ओर तार्किक सिद्धान्त है। अतः अचेतन (जड़) से चेतन (प्राणी–सजीव–चेतनावान् जीव) कैसे उत्पन्न आस्तिकों से हैं यदि ब्रह्म परमात्मा **God** या खुदा हम जीवात्माओं का स्वामी, पूज्य और उपास्य है तो क्या यह अन्याय नहीं होगा कि गीता, कुरान या बाइबिल द्वारा मानवों को सत्य धर्म और ज्ञान का प्रकाश उसने क्रमशः आज से पांच हजार, दो हजार या डेढ़ हजार वर्ष पूर्व ही क्यों कराया जब कि इस धरती पर मानव समुदाय को अवतरित हुए करोड़ों और अरबों वर्ष हो चुके हैं? काल क्रमानुसार ईश्वरीय ज्ञान में परिवर्तन या निरस्तीकरण सभी कालों में एकरस अखण्ड अद्वैत ब्रह्मज्ञान में घटित नहीं हो सकता। इसी प्रकार धर्म के तत्व युगानुरूप परिवर्तित नहीं हो सकते। इसी दृष्टि से सृष्टि के आदि में ही वेदज्ञान के होने तथा जड़ और चेतन तत्व दोनों के अनादि–नित्य और अनन्त होने का सिद्धान्त पूरी तरह वैज्ञानिक और बुद्धि ग्राह्य सिद्ध हो जाता है। चेतन तत्व भी उपास्य उपासक, अल्पज्ञ–सर्वज्ञ, शरीरी अशरीरी भेद में जीवात्मा और परमात्मा दो रूपों में, इस प्रकार प्रकृति, जीव और ब्रह्म इन तीन अनादि नित्य तत्वों का सिद्धान्त सत्य सिद्ध होता है जिसके प्रकाशक ऋषि दयानन्द है।

(वेद का धर्म) वेद का धर्म वैदिक धर्म है ज्ञान का धर्म है, सत्य का धर्म है, न्याय और प्रकाश का धर्म है। वह हिन्दू धर्म पौराणिक धर्म, शैव–शाक्त, कास्ललिक या वैष्णव धर्म नहीं है वह मानव–धर्म है। वेद का ''आर्य'' शब्द जाति, वर्ण नस्ल या देश का वाचक नहीं है वह गुणवाचक है। स्वयं वेदों के ''**विजानीहि आर्यान् ये च दस्यवः**'' पद (शब्द) बताते हैं कि वेद का आर्य, दस्यु डाकू या लुटेरा शोषक का विरोधी है। वेद की भाषा कभी किसी काल की जनभाषा नहीं रही। संस्कृत की तरह अन्य सभी भाषाओं में वेद के शब्द हैं, वैदिक भाषा के नियम बहुत ही विस्तृत हैं और इसके शब्द भी यौगिक हैं। संस्कृत भाषा के नियमों में संकोच और शब्दों की प्रवृत्ति रूढ़ि होती गई है अन्य भाषाओं की तरह। आधुनिक भाषाशास्त्री भी यूरोपीय भाषा परिवार का मूल वैदिक भाषा को मानते हैं। अनेक भाषा विदों का यह सुझाव भी रहा है कि इण्डो–युरोपियन, इण्डो, जर्मनिक या इण्डो, हिट्टारट के स्थान में इस भाषा, परिवार का नाम आर्य परिवार रखा जाए। प्रसिद्ध भाषा शास्त्री डॉ० उदयनारायण तिवारी का कहना था कि स्वामी जी का आर्य भाषा नाम रखना बहुत बड़े अर्थ गाम्भीर्य और दूरदृष्टि का सूचक था। वेद का परमेश्वरीय नाम ओ३म्, धार्मिक कृत्य यज्ञ, अभिवादन नमस्ते और श्रेष्ठ, सज्जन का नाम आर्य इन शब्दों में व्यापक दृष्टि, अर्थ विवशदाता, सर्वजन ग्राह्ता और असाम्प्रदायिकता है। इनकी तुलना अन्य किसी शब्द से नहीं की जा सकती।

यह अच्छी तरह सबको ज्ञात है कि वेदों का सम्बन्ध, द्रष्टत्व ऋषियों से है मन्त्रद्रष्टारः। अतः वेदों का मर्म या अर्थ ऋषि दृष्टि से ही उद्घाटित होता है। वैदिक ऋषि मधुच्छन्दा, वशिष्ठ, वामदेव, ऋषिकाएं– अपाला, घोषा, रोमशा से लेकर परवर्ती ऋषि–ऐतरेय, याज्ञवल्क्य, गोपथ, मनु, यास्क, पाणिनि और पतञ्जलि तक सभी ऋषियों की वैदिक मान्यताएं एक हैं उसमें कोई मत वैभिन्न नहीं है। वेदों के शब्द यौगिक हैं, उनमें लौकिक इतिहास नहीं है, उनमें लौकिक इतिहास नहीं है, वे सभी सत्य विद्याओं के मूल हैं, धर्म अर्थ काम त्रिवर्ग के साधक सभी शास्त्रों के वे उत्स हैं, स्त्रोत हैं। व्याकरण, शिक्षा कल्प, निरूक्त, छन्द, ज्योतिष, न्याय, सांख्य, योग, मीमांसा, वैशेषिक और वेदान्त, औपनिषदिक ब्रह्म विद्या प्राणविद्या, यज्ञिय कर्मकाण्ड, आयुर्वेद, धनुर्वेद, अथर्ववेद तथा गान्धर्व वेद, दर्शनों तथा विविध विद्याओं गणित राजनीति, सैन्य संचालन, कृषि, व्यापार, भूगर्भ, वनस्पति तथा जन्तु विज्ञान प्रभृत्ति शाखाओं का विस्तार वैदिक ऋचाओं की प्रेरणा से हुआ है। उनमें विद्या, युक्ति तर्क और विज्ञान के विरूद्ध कुछ भी नहीं है। ऋषियों की यही दृष्टि दयानन्द को भी मान्य है। दुःख है कि वेदार्थ की यह प्राचीन दृष्टि कालान्तर में तिरोहित हो गई। आचार्यों और पण्डितों के मध्यकालीन भाष्य ऋषियों की दृष्टि से मेल नहीं खाते।

अतः ऋषि दयानन्द उन्हें चुनौती देते हैं। यही कारण कि ऋषि दयानन्द यास्क से सहमत हैं सायण और महीधर से नहीं। पाणिनि से सहमत है भट्टोजी दीक्षित से नहीं। मनु से सहमत हैं कुल्लुक भट्ट से नहीं। व्यास और जैमिनि से सहमत है, शंकराचार्य और शबर स्वामी से नहीं। व्यास और जैमिनि से सहमत हैं, संकराचार्य और शबर स्वामी से नहीं। क्योंकि मूल सूत्रकार ऋषियों के व्याख्याकार बहुधा मूलपथ से भटक कर सम्प्रदाय का प्रवर्तन कर देते हैं।

आर्ष और अनार्ष : ऋषि दयानन्द किसी प्राचार्य साधु, भक्त, पण्डित, मुल्ला, पादरी, पीर अवतार और पैगम्बर के अनुयायी नहीं है। इन सभी का मूल्यांकन वे हंस की भांति परमहंस बनकर नीरक्षीर विवेक करते हैं। आर्ष दृष्टि ओर ऋषियों का मन्तव्य उन्हें प्रिय है। क्योंकि आर्ष काल मानवता का काल है। अनार्ष काल दानवता और साम्प्रदायिक कलह–परायणता का काल हैं महाभारत काल से पूर्व हिन्दू–मुस्लिम–ईसाई आदि मत मतान्तरों को साम्प्रदायिक विद्वेष नहीं था। ऋषि दयानन्द उसी दृष्टि के पोषक हैं। अतः पण्डितों और आचार्यों के, मुल्ला और पादरियों की साम्प्रदायिक ग्रंन्थों को परतः प्रमाण और साम्प्रदायिक ग्रंथों को अनार्ष मानकर त्याज्य कहने के पीछे उनकी यही जनकल्याण भावना थी।

वैदिक सिद्धान्त और दयानन्द : एकेश्वर के स्थान पर बहुदेवतावाद या अवतारवाद या पैगम्बरवाद, पातंजल योग दर्शन के अष्टांग मार्ग के स्थान पर धूप–दीप, नैवेद्य परक मूर्ति पूजा, स्वाध्याय, सत्संग, तप और यज्ञ के स्थान पर, गंगा स्नान, तीर्थ यात्रा, नाम कीर्तन से पाप नाशन, ज्ञान कर्म उपासना के समन्वित पथ के स्थान में केवल, कल्पित ज्ञानमार्गी, भक्तिमार्गी, सगुण–निर्गुण धारा रामाश्रयी कृष्णाश्रयी शाखा का अवलम्बन ऋषि दयानन्द श्रेयस्कर नहीं समझते। पंचयज्ञों और संस्कारों को उन्होंने प्रबल प्राणवत्ता और अर्थवर्त्ता प्रधान की हैं पितृयज्ञ के स्थान पर मृतकश्राद्ध और तर्पण, गुणकर्मस्व भावपरक वर्ण व्यवस्था के स्थान पर म्रियमाण जन्मतः अभिमानमूलक जाति व्यवस्था की इसके समुचित कारण ऋषिवर ने दर्शाये हैं। स्व देशभक्ति के समर्थक अन्यायकारी शोषक परराष्ट्रनीति के कट्टर विरोधी हैं। सादगी तपोमय जीवन, आदर्श गृहस्थ धर्म और चार

शेष पृष्ठ ८ पर

सामयिक राष्ट्र हित में एक चिन्तन –

सम्प्रदायवाद का विष घातक है

– आचार्य सोमेन्द्र सिंह

भारत में आज सबसे ज्यादा चर्चा रोहिंग्या मुसलमानों को शरण देने को लेकर हो रही है। आये दिन उनको लेकर धरने प्रदर्शन हो रहे है। रोहिंग्या मुसलमान जो स्वयं के देश से विद्रोह करने व सेना पर हमले करने के जुर्म में वहां से भागने को मजबूर हुए उनको बसाने के लिए भारत में वकालत की जा रही है। जबकि सबको पता है रोहिंग्या मुसलमानों का आतंकी संगठनों से संबंध है, इसीलिये म्यांमार की सरकार को यह फैसला लेना पड़ा कि उन्हें देश से बाहर कर दिया जाये। रोहिंग्या समुदाय की हिमायत करने वालों को सोचना चाहिए कि उन्हें अपने देश से ही क्यों निकाला जा रहा है? जबकि म्यामांर बौद्ध धर्म की अधिकता वाला देश है जो कि शांति प्रिय धर्म है। जिस धर्म ने हमेशा शान्ति, सौहार्द व समरसता का सदंश दिया है। उसी देश से यह भीषण समस्या उभर कर सामने आयी है कि खुद के देशवासियों को वहां से खदडे़ा जा रहा है। हमें उसकी मूल समस्या में जाने की जरूरत है जब तक हम सही प्रकार से जानकारी प्राप्त नही करेगें कि रोहिंग्या समस्या कहाँ से और क्यों पैदा हुई तब तक हम सही निर्णय नही ले सकते। हम भावनाओं में बहकर उन देशद्रोहियों का समर्थन करते रहेगें जो स्वयं देश के लिये खतरा है। रोहिंग्या समस्या आज की नहीं बहुत पुरानी है। म्यामांर में बौद्ध धर्म को मानने वाले लोग है जो हमेशा शान्ति व सौहार्द की बात करते है। बौद्ध धर्म स्थापना काल से ही शान्ति प्रिय रहा है। जानकारी के अनुसार १६वी शताब्दी में म्यामांर मे बकरीद पर रोक लगा दी गयी थी जो १८वीं शताब्दी में राजा अलागे यापा के बाद भी जारी रही। उस समय भी कुंर्बानी को लेकर संघर्ष होते रहे लेकिन मुस्लिमों की सख्या कम हाने के कारण यह संघर्ष उग्र रूप नहीं ले सका जो वर्तमान में है।

उसके बाद अफगानिस्तान में एक प्रातं है बालयान यह कई शताब्दियों तक बौद्ध धर्म की आस्था का केन्द्र था यहां पर बौद्ध मठ–मन्दिर थे। यह स्थान मौहम्मद साहब के जन्म से पहले तक बौद्ध तीर्थ स्थान था। उसके बाद औरंगजेब ने इन बौद्ध स्थलों को तोड़ने का प्रयास किया परन्तु ये इतने मजबूत थे कि इनको तोड़ पाना मुश्किल था। अपनी वैमनस्या के कारण वह उनको जो नुकसान पहुंचा सकता था पहुँचाया मगर वह उनको समूल नष्ट नही कर सका, जिसके अशं आज भी प्राप्त होते हैं। उसके बाद सन् २००१ में मुल्ला उमर ने इन स्थलों को फिर से तोड़ने का प्रयास किया वह काफी सफल भी हुआ और उसने बौद्ध स्थानों को बहुत नुकसान पहुचांया। उसने म्यामांर में अपने संगठन का प्रचार–प्रसार किया। रोहिंग्या मुसलमानों को अपना मोहरा बनाकर बौद्धों के खिलाफ हिंसा फैला दी और यह क्रम कई दशकों से म्यामार में जारी है जिसमें आतकंवादी सगंठन भाग लेकर म्यांमार को अशान्त करने व बौद्धों को खत्म करने का प्रयास कर रहे है। अब जब म्यामांर में मुस्लिमों की सख्या लगातार बढ़ रही है तो उन्होंने म्यांमार की सेना पर हमला किया और बौद्धों के धर्म स्थलों को तोड़ना शुरू किया तब जाकर म्यामांर की सेना को यह ठोस कदम उठाना पडा़ कि रोंग्हिया मुसलमानों को देश से बाहर कर दिया जाय। रोहिंग्या मुस्लिम देश के खिलाफ षड्यन्त्र रचने के जुर्म में लगातार पकड़े जाते रहे है।

वो जहां भी बहुसंख्यक है उन्होंने बौद्धों को वहां से खदेड दिया है। उन्हीं रोंहिग्या मुसलमानों को भारत में बसाने की मांग की जा रही है। मैं पूछना चाहता हूं कि ५६, ५७ इस्लामिक राष्ट्र हैं उन्होंने अपने देश में इनको क्यों शरण नहीं दी। जबकि सऊदी अरब की टैटं सिटी मीना ५० स्क्वायर कि०मी० जमीन पर ५ लाख एयर कंडीशन टैंट खाली है जो ५० लाख लोगों को बसेरा दे सकते हैं। लेकिन किसी भी देश ने मदद का हाथ नहीं बढ़ाया। यह बहुत ही चिंतन का विषय है। आखिर म्यांमार से चीन लगभग १००० कि०मी० दूरी पर है जबकि भारत वहां से ४–५ गुना दूरी पर है फिर वे चीन जाने के स्थान पर यहां आने को क्यों आतुर हैं। उन्हें पता है कि भारत में ही हमारे सहयोगी आसानी से मिल सकते हैं। जो खाते भारत की है और गाते दूसरे देशों की है। शरणार्थियों के नाम पर पागल कुत्तों को नहीं बसाया जा सकता। जो देश के लिये घातक हों मैं उन लोगों से पूछना चाहता हूँ कि जो रोंहिंग्या लोगों को शरण देने की बात करते हैं। उन्हें अपने ही देश में विस्थापितों का जीवन जीने के लिये मजबूर लाखों कश्मीरी पण्डित क्यों नहीं दिखाई देते। वे अपने ही देश में बेगानों की तरह जीवन यापन कर रहे हैं। उनके बच्चों एवं महिलाओं पर अत्याचार किये गये उनके लिये किसी ने सोचा है ? किसी ने नहीं।

भारत में प्रतिवर्ष तीन करोड़ लोग बाढ़ से प्रभावित होते हैं उनकी सुध किसी ने नहीं ली हजारों लोग भूखें पेट रात को सो जाते हैं पाकिस्तान में १ करोड़ २५ लाख हिन्दू थे जो अब मात्र १० लाख रह गये हैं उनके बारे में किसी ने नहीं सोचा। बाग्लादेश में १९४७ में हिन्दू २८ प्रतिशत थे जो १९८१ में १२ प्रतिशत तथा २०११ में ९ प्रतिशत रह गये उनकी घटती जनसंख्या एवं पलायन के बारे में किसी भी व्यक्ति ने उनके अधिकारों की बात नहीं की। हिन्दुओं पर लगातार अत्याचार किया जा रहा है और पलायन के लिये मजबूर किया जा रहा है उसके लिये कोई आवाज क्यों नहीं उठाता। जो आवाज उठायेगा वह साम्प्रदायिक कहलायेगा। भारत में सैक्युलरिज्म के नाम पर जो नंगा नाच किया जा रहा है उसके बहुत ही गम्भीर परिणाम होगें यदि यह सिलसिला नहीं रूका तो देश गर्त में चला जायेगा। देश में कौन रहेगा या नहीं यह भारत की सरकार तय करेगी, न कि सड़कों पर भीड़ इकट्ठी करके देश को तोड़ने की बात करने वाले चंद जयचंद एवं विदेशी आक्रन्ताओं के वंशज। भारत में शरणार्थियों को लेकर संयुक्त राष्ट्र के १९५१ के कन्वेंशन पर दस्तखत नहीं किये गये है जो हर प्रकार के शरणार्थियों को जगह दी जाये। सरकार को बहुत ही सोच समझकर निर्णय लेने की जरूरत है देश की एकता के लिये खतरा बनने वालों को इस देश में कोई स्थान नहीं है भारत की अस्मिता और सुरक्षा सबसे पहले है। भारतीय मानवाधिकार कार्यकर्ताओं एवं रोंहिग्या के समर्थकों को भावनाओं में बहकर नहीं सोच समझकर एवं देशहित में समर्थन करना चाहिए।

भारत प्राचीनकाल से सहिष्णुता–प्रेम, भाईचारे आपसी सौहार्द की भावना के लिए जाना जाता है। भारत ने विभिन्न संस्कृतियों को अंगीकार किया है जो उसकी महत्ता को प्रदर्शित करता है। परन्तु देश की सुरक्षा के साथ किसी भी कीमत पर समझौता नहीं किया जा सकता। जो देशहित में होगा वही सर्वमान्य निर्णय होगा।

मो० ६४१०८१६७२४

हैसियत

– सीता राम गुप्ता

विनोद कुमार जैसे ही दुकान में घुसे दुकान के मालिक सत्यनारायण ने उन्हें आदर से बिठाया और उनके मना करने के बावजूद लड़के को चाय लेने के लिए भेज दिया। उसके बाद सत्यनारायण ने पूछा, " कहिए विनोद बाबू क्या सेवा करूँ?" विनोद कुमार ने कहा कि एक ऊनी शॉल या चद्दर दिखलाइए। विनोद कुमार सत्यनारायण की दुकान के पुराने कस्टमर हैं। वो जानते हैं कि विनोद कुमार की पसंद हमेशा ऊंची होती है और पैसे का मुंह देखना वो नहीं जानते। उन्होंने एक से एक बढ़ियां ऊनी शॉलों और चद्दरों का ढेर लगा दिया। विनोद कुमार ने शॉलों और चद्दरों की क्वालिटी को देखते हुए कहा, "सत्यनारायण भाई इतनी हैवी नहीं कोई हल्की सी शॉल या चद्दर दिखलाइए।" यह सुनकर सत्यनारायण को विश्वास नहीं हुआा तो उन्होंने कहा, "हल्की और आप? क्यों मज़ाक कर रहे हो विनोद बाबू? हल्की शॉल का क्या करेंगे आप?"

विनोद कुमार ने कहा, "ऐसा है सत्यनारायण भाई हमारी बहन उर्मिला है न उसकी सास शांतिदेवी के लिए भिजवानी है। उन्होंने कई बार मुझसे कहा है कि विनोद बेटा मुझे एक अच्छी सी गरम चद्दर ला के दे। तेरी पसन्द बड़ी अच्छी होती है। पहले भी तूने एक शॉल लाकर हुई शॉल और चद्दरों के ढ़ेर को एक तरफ सरका कर कुछ मीडियम किस्म की शॉलें खोल दी। विनोद कुमार ने निषेधात्मक मुद्रा में सिर हिलाते हुए कहा कि और दिखलाओ। सत्यनारायण हैरान था पर ग्राहक की मर्जी के सामने लाचार थी। उसने सबसे हल्की शॉलों का बंडल खोला और शॉलें विनोद कुमार के सामने फैला दीं। विनोद कुमार ने साढ़े चार सौ रूपए की एक शॉल चुन ली और उसे पैक करवाकर घर ले आए और उसी दिन शाम को उसने वो शॉल बहन की सास को भिजवा दी।

शॉल पाकर शांतिदेवी बड़ी खुश हुईं। ये बात नहीं थी कि शांतिदेवी के घर में किसी चीज़ की कमी थी या उसके बेटे–बहू उसके लिए कुछ लाकर नहीं देते थे पर वो अपने रिश्तेदारों पर भी अपना हक़ समझती व जताती रहती थी। विनोद पर तो वह और भी ज्यादा हक जताती थी क्योंकि विनोद उसे अच्छा लगता था लेकिन विनोद की भेजी हुई शॉल वो पांच–सात बार ही ओढ़ पाई होंगी कि एक दिन रात के वक्त उसके सीने में तेज दर्द हुआ और दो दिन बाद ही रात साढ़े बारह बजे के आसपास वो इस संसार से सदा के लिए विदा हो गईं। उनकी अंत्येष्टि के लिए अगले दिन दोपहर बारह बजे का समय निश्चित किया गया। सुबह–सुबह सत्यनारायण अपनी दुकान खोल ही रहे थे कि विनोद कुमार वहां पहुंचे और कहा, "उर्मिला की सास गुजर गई है एक चद्दर दे दो।"

सत्यनारायण ने बड़े अफ़सोस के साथ कहा, "ओह! अभी कुछ दिन पहले ही तो आप उनके लिए गरम शॉल लेकर गए थे। कितने दिन ओढ़ पाईं बेचारी?" उसके बाद सत्यनारायण ने चद्दरों का एक बंडल उठाकर खोला और उसमें से कुछ चद्दरें निकाली। विनोद कुमार ने चद्दरे देखी तो उनका चेहरा बिगड़ सा गया और उन्होंने कहा कि भाई जरा ढंग की चद्दरे निकालो। कई बंडल खुलवाने के बाद विनोद कुमार ने जो चद्दर पसंद की उसकी कीमती थी पच्चीस सौ रूपए। सत्यनारायण ने कहा," विनोद बाबू वैसे आपकी मर्ज़ी पर मुर्दे पर इतनी मंहगी चद्दर कौन डालता है?" विनोद कुमार ने कहा, "बात मंहगी–सस्ती की नहीं हैसियत की होती है। उर्मिला की ससुराल वालों और उनके दूसरे रिश्तेदारों को पता तो चलना चाहिए कि उर्मिला के भाई की हैसियत क्या है और उसकी पसंद कितनी ऊंची हैं।

पीतमपुरा दिल्ली मो० : ०९५५५६२२३२३

वेद प्रचार समारोह एवं वार्षिकोत्सव

आर्य समाज दौराला मेरठ ८ अक्टूबर रविवार को मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती के ब्रह्मत्व में स्वस्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ तत्पश्चात् वेद प्रवचन एवं उपदेश सत्संग का आयोजन स्वामी चन्द्रदेव जी की अध्यक्षता में हुआ मुख्य अतिथि पूर्व केन्द्रीय मन्त्री संजीव बालियान रहे क्षेत्र के विशिष्ट व्यक्तित्वों को सम्मानित किया गया श्री सुरेन्द्र पाल जी मवी कलॉ, श्री गजेन्द्र सिंह जी पहलवान, श्री शौदान सिंह जी खानपुर, श्री बलराज सिंह जी दौराला, श्री खिलाड़ी जी तथा प्रबुद्ध छात्राओं को भी पुरस्कार स्वामी जी द्वारा प्रदान किये गए। श्री कृष्ण दत्त नादान एवं नरेश निर्मल के ओजस्वी भजन हुए श्री राजपाल सिंह आर्य, संयोजक श्री रस्तोगी जी प्रधान और ब्रह्मपाल सिंह आर्य मन्त्री का सहयोग रहा श्रीमती डॉ० नीरा तोमर प्रि० रामपाल सिंह आर्य यजमान रहे आर्य कन्या इण्टर कालेज की भव्यता अति सराहनीय रही। क्षेत्र से भी आर्यों ने उत्साह पूर्वक भाग लेकर कार्यक्रम सफल किया।

2. आर्य समाज भड़काऊ बुलन्द शहर– नहर किनारे बसे ग्राम में ७.८.९ अक्टूबर को वेद प्रचार समारोह का आयोजन किया गया आचार्य प्रमोद कुमार जी पसवाड़ा ने संयोजन किया श्री उपेन्द्र जी तथा तेजवीर सिंह के भजन हुए स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सभा मन्त्री का आशीर्वाद मिला क्षेत्र के आर्यों ने उत्साहपूर्वक कार्यक्रम को सम्पन्न किया स्याना नया गांव ख्वाजपुर, बनभौरा, बुगारसी बैरा आदि ग्रामों से आर्यों ने पहुंचकर शोभाा बढ़ाई।

3. आर्य समाज मुकीमपुर– पिलखुवा, हापुड़ में २, ३, ४ अक्टूबर को वेदप्रचार समारोह का अयोजन हुआ टुकीराम सिंह आर्य मन्त्री ने बताया कि शरद् पूर्णिमा पर खीर बनाकर रात्रि में चन्द्रमा की चांदनी में रखकर उसमें दवाई श्वास दमा रोगियों को दी गई। श्री उपेन्द्र जी आर्य के भजन उपदेश हुए तथा उपदेश हुए स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती का आशीर्वाद प्राप्त हुआ पिलखुवा, अतरौली आस–पास के ग्रामों से भी आर्य जनता ने लाभ उठाया और कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। आर्य समाज के प्रधान शमशेर सिंह जी के प्रति सभी ने अपनी श्रद्धाञ्जली अभिव्यक्त की।

4. आर्य समाज खानपुर–मेरठ में प्रतिवर्ष की तरह ३० सितम्बर को वेद प्रचार समारोह का आयोजन किया गया सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती यज्ञ के ब्रह्मा रहे गुरूकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारियों ने वेदपाठ किया श्री संजीव रूप बदायूँ एवं सन्दीप वैदिक मु० नगर के भजन हुए क्षेत्र के विशिष्ठ व्यक्तिओं का सम्मान किया गया श्री शोदान सिंह आर्य ने संयोजन किया उनके सुपौत्र विनय आर्य को खेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्री योगन्द्र सिंह योगी को भी याद किया गया श्री हरेन्द्र सिंह, श्री राजेन्द्र चिकारा, श्री जगत सिंह पूर्व विधाययक, श्री अमन सिंह जी ने मञ्च की शोभा बढ़ाई, श्री प्रि० रामपाल सिंह बड़ौत, श्री विद्यासागर, श्री जिले सिंह, श्री डॉ० आर. पी.सिंह मेरठ आदि–२ विशिष्ट अतिथि उपस्थित रहे, श्री धीरज सिंह, श्री महताब सिंह, श्री ओमवीर सिंह मुख्य यजमान रहे कार्यक्रम भव्य एवं प्रशंसा के योग्य था सुन्दर पाण्डाल बैठने की व्यवस्था भोजन की व्यवस्था अति सुन्दर थी श्री ओमवीर सिंह श्री गुलवीर सिंह जी ने सभी साथी बालेश्वर आर्य, ओंकार सिंह आर्य, राजेन्द्र सिंह विकरण आर्य, डॉ० चिकारा, जितेन्द्र सिंह आदि–आदि बधाई के पात्र हैं। आई.टी.आई. पातला के०प्र० वीरेन्द्र सिंह जी, को भी सम्मानित किया गया।

5. आर्य समाज भगवानपुर बांगर– मेरठ का वार्षिक सम्मेलन एवं वेद प्रचार समारोह २८. २९.३० सितम्बर २०१७ को आयोजित हुआ कार्यक्रम में सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती के वेद प्रवचन हुए श्री सहदेव बेधड़क के गीतों का आनन्द लिया कार्यक्रम में स्वामी विजयानन्द जी, स्वामी देवेश्वरानन्द जी खजूरी, आचार्य प्रमोद कुमार जी के अतिरिक्त म० राजमुनि, म० सोम मुनि जी, म० हरिश्चन्द्र आर्य, म० धर्म सिंह, हरीश पाल आर्य के विचारों से भी आर्य जनता लाभान्वित हुई कृपाल सिंह शास्त्री संयोजक रहे दर्शन पाल आर्य रामवीर सिंह सतेन्द्र सिंह ताराचन्द्र शास्त्री रणवीर सिंह जयवीर सिंह महेन्द्र सिंह आर्य आदि–आदि का भरपूर सहयोग रहा अटौला किला खजूरी किठौर क्षेत्र के ग्रामों से पधार कर लोगों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

6. आर्य सामज कासिमपुर पावर हाऊस– साधु आश्रम अलीगढ़ का भी वेद प्रचार एवं वार्षिक सम्मेलन २.३.४ अक्टूबर को सम्पन्न हुआ, श्री नरेन्द्र सिंह चौहान के संयोजन एवं अमर सिंह चौहान के देखभाल में सम्मेलन सफल रहा क्षेत्रीय आर्यजनता के विद्वानों के विचारों से लाभ उठाया तथा बुराईयाँ छोड़ने का व्रत लिया।

– राणधीर शास्त्री
मेरठ

वैदिक संस्कृति ज्ञान वर्धनी प्रतियोगिता

आर्य समाज खेड़ा अफगान सहारनपुर के अध्यक्ष श्री आदित्य प्रकाश जी आर्य के निर्देशन में जिले के विभिन्न कालेजों के बच्चों की परीक्षायें प्रतियोगिता के रूप में ली गई इससे छात्रों को वैदिक संस्कृति का ज्ञान होगा तथा बच्चे संस्कारवान् बनेगें उनके प्रयास के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० लखनऊ शुभ कामनायें प्रदान करती है।

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती –सभा मन्त्री

शोक संवेदना एवं श्रद्धांजली

आर्य समाज श्यामपुर जट्ट जि0 हापुड़ के उपप्रधान श्री राजन सिरोही की माता जी श्रीमती रतन कौर धर्म पत्नी चौ० शिवध्यान सिंह जी का देहावसान ४.१०.२०१७ को हो गया उनका जन्म मई १९४० में हुआ था अतिथि सेवा, धर्मपारायणा माता जी का अन्तिम संस्कार एवं शान्ति यज्ञ स्वामी अखिलानन्द सरस्वती सरस्वती के ब्रह्मत्व में हुआ उनके सुपुत्र रमन सिरोही ने धर्म पत्नी अंशु एवं सीमा सिरोही के साथ आहुतियां प्रदान की पौत्र ज्ञान–ज्ञात सिरोही पौत्री अनुसी आर्या सहित भरा परिवार छोड़कर माता जी गई हैं उनके जाने से क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई। सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती पूठ, प्रि० महावीर सिंह जी, क्षेत्रीय विधायक कमल सिंह मलिक, चौ० शीशपाल सिंह, पूर्व विधायक मदन चौहान, राहुल धाना आदि–आदि क्षेत्र से धार्मिक राजनैतिक लोगों ने आकर परिवार में शोक संवेदना व्यक्त की। डॉ० जयवीर सिंह प्रधान आर्य समाज सहित ग्राम के सैकड़ों लोगों ने उपस्थित होकर शान्ति यज्ञ में आहुतियां प्रदान की।

2. आर्य समाज महमूदपुर– कुचेसा रोड़ जि० हापुड़ के प्रधान गुरूकुल ततारपुर के उपप्रधान तथा जिला सभा हापुड़ एवं गुरूकुल पूठ, क्षेत्रीय वेद प्रचार समिति तथा भ्रष्टाचार उन्मूलन समिति के महत्वपूर्ण पदों पर प्रतिष्ठित अमर सिंह आर्य का देहावसान २८ सितम्बर को हो गया वे लगभग ८० वर्ष के थे दिन रात आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में पुरूषार्थ करते थे। सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने परिवार में जाकर शोक संवेदना व्यक्त की शान्ति यज्ञ में स्वामी शिवानन्द जी, स्वामी अखिलानन्द जी, आचार्य प्रेम पाल शास्त्री के अलावा जिला सभा के अधिकारी भारी सेख्या में पधारे सांसद प्रतिनिधि योगेन्द्र जी, विधायक कमल सिंह मलिक, विकास आर्य ज्ञानेन्द्र चौधरी, वेदानन्द आर्य, महेश आर्य, अशोक आर्य सहित क्षेत्र के आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। आपने वानप्रस्थ लेकर समाज सेवा के लिए ही जीवन समर्पित किया हुआ था। आर्य मित्र परिवार की ओर से परिवार को धैर्य की कामना की जाती है।

3. आर्य समाज आलम नगर– बहादुरगढ़ हापुड़ (उ०प्र०) के मन्त्री वीर सिंह आर्य की माता जी का देहावसान ३ अक्टूबर को होगा वे ८० वर्ष की थीं। गुरूकुल पूठ के ब्र० वेदपाठ कर वैदिकरीति से अन्तिम संस्कार किया सभामन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने घर पर जाकर शोक संवेदना व्यक्त की। स्वामी अखिलानन्द सरस्वती ने शान्ति यज्ञ सम्पन्न कराया आचार्य दिनेश जी एवं आचार्य प्रदीप शास्त्रीय ने वेदपाठ किया स्वामी जी का उपदेश हुआ क्षेत्री वेद प्रचार समिति द्वारा आस–पास के २० ग्रामों के आर्यों ने मिलकर शान्ति यज्ञ में भाग लिया क्षेत्रीय विधायक एवं सांसदों ने भी घर पर आकर शोक संवेदना व्यक्त की। वीर सिंह आर्य एक मात्र पुत्र है २ पौत्र हैं दोनों ने मिलकर माता जी की खूब सेवा की है।

4. आर्य समाज शास्त्री नगर मेरठ एवं स्वामी अखिलानन्द सरस्वती गुरूकुल पूठ के संयोजन में पूर्व मन्त्री एवं सांसद डॉ० यशवन्त सिंह जी आर्य के पूज्य पिता श्रीरामचन्द्र सिंह जी का शान्तियज्ञ सम्पन्न हुआ उसके पश्चात् शोक श्रद्धाञ्जली सभा में प्रदेश सरकार के मन्त्री एवं केन्द्रीय मन्त्री तथा विधायकों की संख्या रही मेरठ की आर्य जनता भी भारी संख्या में उपस्थित रही। स्वामी जी का प्रवचन प्रभावशाली रहा आर्य मित्र परिवार एवं आर्य प्रतिनिधिसभा उ०प्र० की शोक संवेदना व्यक्त करती है।

– अमर पाल सिंह आर्य
अधिष्ठाता

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
....
....

आर्य सामाज धानपुर मेरठ में वेद प्रचार में भाग लेते सभा मंत्री धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

पृष्ठ ५ का शेष

महर्षि दयानन्द ...

आश्रमों की मर्यादा के स्वामी जी प्रबल पक्षपोषक हैं। जीवन में निष्कपटता, ईमानदारी, नर–नारी सम्भाव और अनाथ दीन दुःखियों क्षुद्र कृमि कीट पतंगों सभी वन्य जल–थल प्राणियों सहित गोवंशों पर जातीय, समाजिक तथा राष्ट्रीय कृपाभाव के वे आकांक्षी हैं। सत्य अर्थ का प्रकाश करना स्वामी जी का ध्येय था और यह उनके जीवन का लक्ष्य था। स्वामी जी सभी ऋषियों के प्रशंसक हैं और प्रतिनिधि प्रवक्ता भी उन्होंने कोई नवीन मत मतान्तर की स्थापना नहीं की है।

उनका संदेश वेदों का संदेश है, ऋषियों का संदेश है, संसार के सभी मनीषियों के संदेशों का सार है। स्वामी जी ने कभी अपनी व्यक्तिगत प्रशंसा नहीं चाही और न इसके लिए उन्होंने कोई प्रयत्न ही किया। व्यक्ति पूजा एक प्रकार की मूर्ति पूजा है, स्वामी जीवाणु ग्राहकता के समर्थक हैं। यही कारण है कि आर्य समाज इतने वर्षों के बाद भी स्वामी जी की मूर्ति स्थापना कहीं नहीं करता और न करना चाहिए।

दयानन्द का यह प्रकाश विश्व का तमस् दूर करे। केवल भौतिक तमस् ही नहीं अन्तः तमस् भी। अन्धकार से प्रकाश की ओर असत्य से सत्य की ओर अज्ञान से ज्ञान की ओर, अधर्म से धर्म की ओर हम चलें। असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योति–र्गमय।। मृत्योर्माऽमृतं गमय।।

भूल सुधार

आर्य मित्र के गत ३६ अंक में ३.१०.२०१७ को पृष्ठ ३ पर धरोहर के प्रारम्भ मे जो मनु का श्लोक दिया है उसके नीचे शुद्ध पाठ इस प्रकार है–

"महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में मनु का यह श्लोक उद्धृत करके जो प्रेस एवं प्रूफ की भूलवश अशुद्ध छप गया है उसका खेद है–

यान्यास्कं सुचरितानि दो बार छप गया है कृपया भूल सुधार कर पढ़ेगें।

– सम्पादक

काशी शास्त्रार्थ स्मृति सभा

दिनांक २६ अक्टूबर से १ नवम्बर तक दुर्गाकुण्ड में आर्य महोत्सव वाराणसी में मनाया जा रहा है। महोत्सव में आर्य जगत के प्रकाण्ड विद्वान् व भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

श्री डॉ० धीरज सिंह प्रधान व स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० ३० अक्टूबर को प्रातः पहुच रहे हैं जो पूर्वांचल आर्य सम्मलेन को सम्बोधित करेंगे।

आप सभी महोत्सव में सादर अमंत्रित हैं ।

बेचन सिंह आर्य, मिर्जापुर

आर्य वीरांगना दल शिविर समापन समारोह–बागपत

पलड़ी–जनता इण्टर कालेज पलड़ी के प्रांगण में आर्य वीरांगना शिविर को आयोजन किया गया शिविर में १५० वीरांगनाओं ने भाग लिया। समापन कार्यक्रम में मुख्य वक्ता एवं अध्यक्षता का दायित्व सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती को दिया गया। मुख्य अतिथि श्री नरेश चन्द्र वर्मा दिल्ली, एवं वि० अतिथि एस.डी.एम. बड़ौत रहे प्रशिक्षण आचार्य धर्मवीर सिंह के निर्देशन में हुआ संयोजन रामगोपाल आर्य ने किया। प्रधानाचार्य समर सिंह आर्य ने मंत्री का आभार व्यक्त किया। सभा में जिला सभा बागपत के अध्यक्ष प्रि० रामपाल सिंह जिला मंत्री रिपुदमन आर्य, संचालक आर्यवीरदल हरपाल सिंह बागपत के प्रवेश आर्य योगेश आर्य, तथा कृष्ण पाल आर्य, डॉ० ईश्वर सिंह सहित सभी क्षेत्रीय आर्य समाजों के अधिकारी भी उपस्थित रहे। विभिन्न कालेजों से पधारी वीरांगओं के विद्यालयों को भी स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। स्वामी जी ने बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं बेटी बढ़ओं का भी नारा लगाया बेटियां स्वयं शक्ति का रूप हैं शिविर प्रत्येक जिला सभा को प्रदेश भर में लगाने की आवश्यकता पर उत्साहित किया आयोजक मण्डल को बहुत–बहुत शुभ कामनायें।

– आचार्य धर्मवीर

आर्य वीरांगना दल शिविर पलड़ी की झलकियां

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक – मुद्रक –प्रकाशक –श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।